दिखावट बनाम वास्तविकता

परिचय

होन्ग कोंग की तरफ से नमस्कार !

मैं आज आपसे दिखावट और वास्तविकता के बारे में बात करना चाहूंगा, केवल ईसाईयों के लिए ही नहीं, परन्तु उनके लिए भी जो परमात्मा को जानना चाहते हैं और वो लोग जो अभी पूरी तरह से गैर ईसाई हैं ।

मैं आपसे जानना चाहूंगा की क्या कभी आपने ऐसा अनुभव किया है की आप के पास कुछ बहुत ही सुन्दर सेब हों जो दिखने में अत्यंत ही सूंदर हैं ? बेचने वाले ने उन्हें बहुत ही चमकदार बना दिया है । और जब आप घर पहुँच कर उन्हें खोलते हैं, तो अंदर से सूखे निकलते हैं , वे रोटी जैसे हैं या फिर उनमें कीड़ा लगा हुआ है ?। ऐसे अनुभव हमें सिखाते हैं की इस प्राकर्तिक विश्व में , दिखावट और वास्तविकता को पहचानना किंतना आवश्यक है। कुछ चीज़ें जो दिखने में बहुत ही अच्छी और वांछित हैं, असल में वैसी नहीं हैं।

की जो दीखता है , जरुरी नहीं है की वो वैसा ही है। इस संसार का अनुभव सच्चाई नहीं है। चीज़ें इस से भी भयावह हो सकती हैं । कोई व्यक्ति हमें बहुत ही आकर्षक लग सकता है परन्तु बाद में जाकर यही व्यक्ति जो की शैतान के द्वारा आपकी जिंदगी में भेजा हुआ हो, आपकी जिंदगी को बेहद कष्टदायी बना सकता है , खासतौर पर अगर आप ईसाई हैं । मैं सोचता हूँ की अब तक आपको संकेत मिल गया होगा की मैं इस प्रवचन में क्या सन्देश देना चाह रहा हूँ।

वास्तकविकता और दिखावट - प्रासंगिकता

दिखावट और वास्तविकता में फर्क जान लेना क्यों आवशयक है ? इसका संबंध हर पुरुष और महिलाओं से है चाहे वो ईसाई है या फिर गैर ईसाई , परन्तु ईसाईयों के लिए यह अधिकतम आवश्यक है की वो येशु में अपनी क्षमता को जाने और पहचाने।चलिए ईसाई परिस्थिति में कुछ उदहारण देखते हैं की कैसे दिखावट और वास्तविकता अलग हो सकती है ।

पहला उद्दाहरन एक ऐसे ईसाई व्यक्ति का है जो की संघर्ष करता नज़र आ रहा है, बाहरी दिखावट के आधार पर अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी में मुश्किलें झेल रहा है। संभवतः यह व्यक्ति एक ऐसे व्यक्ति के मुकाबले में जो की विजयी और बेहतर जिंदगी जीता हुआ दीखता है, बेहतर जिंदगी जी रहा है । बाहरी परिस्थितियों के बावजूद यह व्यक्ति जो की संघर्ष करता नज़र आ रहा है, संभवतः गहरी हर्ष और ख़ुशी जो की केवल परमात्मा ही दे सकता है और जो बाहरी दुनिया से स्वतंत्र है, अनुभव कर रहा है। यह वही हर्ष और ख़ुशी है जिसने पॉल और सीलास को सक्षम किया था की वे लोग जेल में होते हुए भी और कठोर जिस्मानी संघर्ष भुगतते हुए भी ईश्वर का स्तुति गान कर रहे थे।

दूसरा उद्दाहरन उस व्यक्ति को है जो की दिखने में कठोर और पहुँच से बाहर है जबकि एक और व्यक्ति जो की सज्जन, सुहाना, अनुकूल और परवाह करने वाला दिखता है परन्तु जब आप उन दोनों का असली रूप जान पायेंगे, ये जान कर आश्चर्यचकित हो जायेंगे की वह व्यक्ति जो दिखने में कठोर है वह वास्तव में नरम, अनुकूल और जरुरी लोगों और मुद्दों की परवाह करने वाला है । दूसरी और जो व्यक्ति दिखने में सज्जन, सुहाना और मित्र जैसा है, ऐसी परिस्थिति में जो उसके अनुसार नहीं है, वास्तव में सतही, आत्म केंद्रित और प्रतिक्रियाशील है। अगर हमारे पास सही अंतर्दृष्टि नहीं है तो लोगो के चरित्र के बारे में और उनकी बाहरी दिखावट के आधार पर संभवतः गलत निष्कर्ष निकाल सकते हैं । अक्सर जो लोग अपना पहला प्रभाव अच्छा नहीं छोड़ पाते हैं , वास्तव में वे लोग उन लोगों के मुकाबले जो दिखने मैं बहुत ही सुहाने होते हैं, बहुत ही गहरे व्यक्ति साबित हो सकते हैं। यह पूरी तरह से ईश्वर के अनुसार है।

१ शमूएल १६: पद्य ७ (एन आई वी)इस बात की पुष्टि करता है कि व्यक्ति को उसकी सतही प्रभाव से कैसे गलत पहचाना जा सकता है । पद्य ७ कहता है-----*" परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।"*

यहाँ संतुलन की आवश्यकता है । यह सही है की कई बार दिखावट वास्तविकता से बहुत अलग हो सकती है परन्तु यह भी सच है की बहुत बार ये दोनों एक ही होते है । अपने पहले उदहारण की और जाते है। सूंदर दिखने वाला सेब अंदर से भी सुन्दर और अच्छी गुणवत्ता का भी हो सकता है । इसलिए चलिए एकदम विपरीत न होकर , उनके लिए जो हमसे बहुत ही अच्छे और अनुकूल व्यवहार के साथ मिलते है , यह सोचकर की वह लोग अच्छे नहीं है , विधिवत संदिघ्ध नहीं होते है। हमें यह याद रखने की आवशयकता है की मत्ती ७: १६ के अनुसार - " *उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोग क्या झाडियों से अंगूर, वा ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं?* इसलिए लोगों को उनके पहले और बाहरी प्रभाव के अनुसार नहीं , बल्कि उनके कर्मो और व्यवहार के अनुसार देखना चाहिए।

तीसरा उदाहरण है उस परिस्थति का जिससे आप सम्भवतः इस समय गुजर रहे हैं और जो आप को हतोत्साहित कर रही है । हालाँकि यह परिस्थति असल में आप के लिए बहुत ही सार्थक और सकारात्मक हो सकती है। अगर हम परिस्थिति की वास्तविकता नहीं समझ सकते है, बहुत संभव है की हम गलत निष्कर्ष निकाल लें की सब ढीक नहीं हो रहा है । बहुत संभव है कि हम समझ लें कि हम बुरी अवस्था में हैं जब हमरे साथ चीज़ें गलत हो रही हों , परन्तु मैं यहाँ कुछ बताना चाहूंगा कि ईश्वर ईसाई चरित्र तब नहीं बनाता है जब जिंदगी हर तरह से खुशनुमा होती है । कभी कभी ईश्वर शत्रु के कार्यों पर अपनी पकड़ ढीली छोड़ देता है जिससे कि वह एक सच्चा ईसाई चरित्र बना सके । याकूब इसलिए कह सका: याकूब १:२-४ (एन आई वी)" *हे मेरे भैया जब कभी भी तुम तरह तरह की मुश्किलों मैं पड़ो, तो इसे बड़े आनंद की बात समझो क्योंकि तुम यह जानते हो की तुम्हारा ईश्वर मैं विश्वास जब परीक्ष्या मैं सफल हो तो उससे सहनशक्ति उत्पन होती है और वह धर्यपूर्ण शक्ति एक ऐसी पूरण्ता को जनम देती है जिससे तुम ऐसे सिद्ध बन सकते हो , जिसमे कोई कमी नहीं रह जाती।"*

यहाँ पर अहम् मुद्दा यह है की एक ईसाई के रूप में हम जो हो रहा है उससे गहरा सम्बन्ध रखें, जिससे की हम बढ़ें और प्रभावी रूप से ईश्वर की सेवा कर सकें ।वास्तविकता को केवल बाहरी दिखावट और सतही अवलोकन या फिर वय्क्तिपरक भावनाओं से नहीं समझा जा सकता है। मैं इस उदहारण के बारे में और बोलना चाहूंगा । ईश्वर ईसाई चरित्र बहुत ही मुश्किल समय से गुजार कर बनाता है । कोई भी जो एक बहुत ही आरामदायी जिंदगी जीता है, ईसा मसीह के जैसा नहीं हो सकता है । इसी कारण से ईश्वर शत्रु की गतिविधियों पर अपनी पकड़ ढीली छोड़ देता है ।

अब मैं आध्यात्मिक क्षेत्र में दिखावट बनाम वास्विकता के बारे में बात करना चाहूंगा। एक चीज़ जिसे वस्तुगत सच्चाई कहते हैं जो ईश्वर के अनुसार है । ईश्वर सच्चाई का बादशाह है ; उसे हर बात का सही रूप में ज्ञान है । इसलिए जो ईश्वर देखता है, वो वस्तुगत सच्चाई होती है । इसलिए हमारे लिए ये बहुत ही जरुरी है की हम सच्चाई को उसी तरह से समझना सीखें जैसे ईश्वर देखता है , बजाये के चीज़ों को वयक्तिपरक भावनाओं और बाहरी दिखावट के आधार पर समझने की गलती करें।

तो, ईश्वर के लिए सच्चाई क्या है? ईश्वर के लिए सच्चाई (जो की वस्तुगत सच्चाई है) उतनी ही आध्यात्मिक है जितनी प्राकर्तिक है । दूसरे शब्दों में , यह संसार जिसमे हम रह रहें है, बहुत तरीकों से सच्चाई नहीं, बल्कि मुखौटा , दिखावट है। सच्चाई आध्यात्मिक भी है और हमे यह समझने की जरुरत है की हमारी लड़ाई आध्यात्मिक है , न की सांसारिक। पॉल ने एफिसियों ६:१२ (एन आई वी) में बहुत ही स्पष्ट किया है *: "क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।"*

यह एक बहुत ही जरुरी और पूर्ण मौलिक सच्चाई है जो की हमें आलिंगन करने की जरुरत है नहीं तो हम पूरी तरह से शैतान के द्वारा धोखा खाते रहेंगे और शैतान हमें अपनी पूर्ण ईसाई क्षमता के साथ एक पूर्ण इसाई जीवन जीने से वंचित करता रहेगा, या फिर कोई जो ईश्वार की तलाश कर रहा है, अपनी जिंदगी ईश्वर को समर्पित करने में बाधाओं का सामाना करेगा।

ए डब्लू तोज़र , जो की १९४० और ५० के दशक के एक जाने पहचाने ईसाई लेखक हैं और जिन्हें आज के युग के पैगम्बर (सिद्ध) होने का श्रेय प्राप्त है, ने अपनी पुस्तक में लिखा है: ' यह संसार- खेल का मैदान या जंग का मैदान।'

"हमारे पूर्वजों ने इस संसार को जंग का मैदान समझा, ना की खेल का मैदान । जबकि आज के समय का संभावित दावा है- " हम यहाँ पर लड़ने के लिए, बल्कि उल्लास करने आये हैं ।"

तोज़र पॉल के नजरिये को मजबूत कर रहा है, की यह संसार काफी हद तक एक आद्यात्मिक जंग का मैदान है ।

एक उपदेशक , जेम्स स्मिथ १८५९ में लिखता हुआ इस संसार की दिखावट और आध्यात्मिक संसार की वास्तविकता में फर्क बताते हुए ज़ोर दे कर कहता है

" *हम सभी बहुत अधिक दिखावे के साथ जीते है। हम सतह के नीचे नहीं देखते हैं, जो की हमें करना चाहिए । उपाधि , भव्य साज सज्जा, बड़ा नाम, बड़ी संपत्ति, शानदार घर, बढ़िया कपडे या फिर लोकप्रिय तालियां हमें आकर्षित करती हैं, हमारी प्रसंशा जीतती हैं और कभी कभी हमारी ईर्ष्या को उत्तेजित करती हैं! पर ऐसा नहीं होना चाहिए । कई लोग जिनके पास इस संसार में उपाधि है, स्वर्ग में तुच्छ मने जाते हैं । कई लोग बढ़िया गाड़ियों में नरक की सवारी करते हैं जबकि कई गरीब लोग पैदल चल कर स्वर्ग तक जाते हैं । कई लोग जो सांसारिक लोगों के द्वारा प्रशंशित हैं, विधाता के द्वारा निन्दित होते हैं। कई लोगों के पास सांसारिक धन और सुख है परन्तु वे लोग सच्चे धन से अनजान हैं। कई लोग जो अपना तन बहुत बढ़िया और महंगे कपड़ों से ढकते हैं, परमात्मा के समक्ष अपनी आत्मा को पूरी तरह से नंगा पाते हैं । और कई लोग जो अभी बहुत ही प्रशंषिक हैं- अन्नतकाल तक निन्दित और मुल्जिम ठहराए जायेंगे। चलिए किसी को बाहरी दिखावट के आधार पर नहीं आंकते हैं, बल्कि न्यायिक निर्णय करते हैं।"*

<u>मैं इस सन्देश के साथ कहाँ जा रहा हूँ?</u>

अब सवाल यह है की इस सन्देश के साथ मैं कहाँ जा रहा हूँ? बाहरी दिखावट और सतही मुद्दों से वास्तव में प्रभावित हो जाना मानविक प्रवर्ति है । यह मानविक कमजोरी जो सभी मनुष्यों को पीड़ा देती है, पर ध्यान देने की तत्काल आवश्यकता है , खास तौर पर ईसाईयों के लिए । ऐसा क्यों हैं?

सबसे पहले, मनुष्य पांच इन्द्रयों के आधार पर कार्य करता है , जो दिखता है और ज़ाहिर है । इस कारण से मनुष्य गलत ढंग से गलत परिणाम निकाल लेता है या फिर गलत प्रतिक्रिया करता है । शैतान इसे अपनी गतिविधियों के द्वारा और भी बदत्तर कर देता है ।

अंधेरे की शक्तियां हमे भ्रमित, मुद्दों को धुंधला और सच्चाई को समझने में बाधा पहुँचाती हैं और इस तरह से हमें धोखे के जाल में फंसा देती है ।

यह मनुष्य के निर्माण से लेकर अब तक चला आ रहा है । शैतान के आदम और ईव (आदम कि पत्नी) के साथ बर्ताव और व्यवहार के शीघ्र विश्लेषण (जांच) से यह तर्क साफ़ हो जाता और यह की शैतान की मौलिक चाल बाज़ी और दाव पेंच अब तक नहीं बदले हैं । चलिए उत्पत्ति ३ : अध्याय ४-६ , (एन आई वि) में देखते हैं

४ तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे,

५ वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।

६ सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।

शैतान ईव का अपने लिए परमात्मा के शब्द की सच्चाई (जो उसके लिए श्रेष्ठ था) में भरोसे को हिलाने में कामयाब हो गया । इसके परिणामतः ईव शैतान के प्रलोभन में आ गयी ।

जिस तरह से ईव प्रलोभित हुयी और मनुष्य का का पतन हुआ , सांसारिक दिखावट जो ईव ने " देखा" से बहुत अधिक सम्बंधित है, वो "दिखने में अच्छा भोजन" और " आँखों को ख़ुशी देने वाला" था, यह सब बाहरी दिखावट से सम्बंधित और परिस्थिति में गलत प्रतिक्रिया उत्तपन करने वाला है ।

दुष्ट शैतान, बाहरी दिखावट पर ज़ोर देता है और बाहरी दिखावट के आधार पर मनुष्य को कर्म करवाना चाहता है । शैतान बहुत सारी चीजों को, जो की असल में आपको बर्बाद कर देंगी, मनोहारी बना सकता है । यह दिखावट से भ्रमित करना है।

सबसे महत्वपूर्ण बात , आध्यात्मिक विवेक के क्षेत्र में हम सबके लिए एक सीख है । क्योंकि ईव प्रार्थनापूर्ण नहीं थी इस लिए, अपने लिए सही और गलत को पहचानने में ईश्वर की सहायता पाने में और उस परिस्थिति में सही तरह से प्रतिक्रिया करने में असफल रही।

दूसरी बात , इस संसार का प्रभाव, इसके विचार और मूल्य, सब बहुत ही व्यापक हैं जब तक हम पीछे हट कर चीजों को आद्यात्मिक दृश्टिकोण के साथ नहीं देखते हैं। दुष्ट शैतान इस संसार में और इस संसार के माध्यम से अपने काम पर लगा हुआ है , जीवन के लिए एक ऐसा दृश्टिकोण जो की कामुक और दिखावटी और अस्थायी है। अगर हम सावधान नहीं हैं, हम लोग आसानी से अपने आस पास के लोगों के तरीकों और दृस्टिकोणों से प्रभावित हो सकते है और हम लोग चीजों को सही तरीके से समझने में असफल हो सकते हैं।

तीसरी बात, इस दिखावटी संसार में , हम आसानी से आध्यात्मिक क्षेत्र और उसकी सच्चाई से सचेत ना होनेकी तरफ झुक सकते हैं। और हम में से बहुत सारे लोग आद्यात्मिक अनुभूति और समझ जो की सच्चाई को आद्यात्मिक पहलु और सही तरीके से समझने की योग्यता है, नहीं रखते हैं।

आद्यात्मिक समझ एक ऐसा गुण है जो की पवित्र आत्मा को सक्रिय करने और आद्यात्मिक युद्ध के मसलों में ज्ञान प्राप्त करने के माध्यम से विकसित होती है। यह सब इतना महत्वपूर्ण हो जाता है जब आप नई टेस्टमैंट में दुष्ट शैतान और उसकी कार्यनीति के ८० से ज्यादा संकेत और सन्दर्भ दिए गए हैं।

एक और तर्क यह भी है की सटीक समझ ईश्वर में बढ़ने और उसकी सेवा करने का एक अभिन्न हिस्सा है । अगर हम चीज़ों को सही तरीके से नहीं समझ सकते हैं, तो हम ईश्वर में कैसे प्रभावी तरीके से बढ़ और उसकी सेवा कर सकते हैं जब हम शैतान की चालों के द्वारा एक फुटबॉल की तरह चारों और लतियाए जाते हैं।

और जब हम चीज़ों को सही से समझते हैं , यह ईश्वर को हममे ओर विश्वास, प्रकट और भरोसा दिखाने में सक्षम करता है । अगर हम चीज़ों को उसी तरीके से जैसे ईश्वर समझते हैं, समझ सकने में कामयाब होते हैं , ईश्वर हम में और भी आश्वत हो जाते हैं की हम उसकी इल्छा प्रभावी तरीके से पूरी कर सकते हैं। हम ईश्वर में और भी आज्ञाकारी हो सकते हैं ।

एक आखरी और सबसे जरुरी जानने योग्य तर्क यह भी है की हम सभी शैतान के द्वारा खींचे और ताने जाते हैं , फलस्वरूप शैतान हमारा मसीहा बन बैठता है और हमारा ईश्वर एक ईर्षालु ईश्वर है। यहाँ पर मौलिक उलझन हो जाती है।

निष्कर्ष

चलिए मुझे यहाँ पर इस निष्कर्ष पर पहुँच जाने दीजिये की इस सन्देश में उठाये गए सभी मुद्दे आशापूर्वक हमारी वास्तविकता को पहचाने में और यह समझने में की हम एक आद्यात्मिक युद्ध में हैं सहायता करेंगे।

अगर हम ईश्वर की सच्चाईपर केंद्रित होते हैं जिसका मतलब है की हमे आद्यात्मिक समझ होनी चाहिए , हम हमारी सच्चाई को समझने की सटीकता को सुधार सकते हैं। यह हमारी ईसाई होते हुए , यशु की तरह बनने की यात्रा में और शत्रु की चालों और कार्यशैली को समझने में सहायता कर सकती है। और गैर ईसाइयों को सहायता कर सकती है की वह लोग भ्रमित न हों और मोक्ष की ओर बढ़ें।

अब मैं आपको अपने लिटिल चर्च वर्ल्ड फ़ेलोशिप ग्रुप्स में, इस सन्देश के प्रमुख तर्कों की चर्चा करने के लिए छोड़ता हूँ। ईश्वर आपका भला करे ओर मैं आपसे अगले हफ्ते मिलता हूँ।

चर्चागत्त प्रश्न

१ - उदहारण नंबर १ दूसरों को जज करने के बारे में है। क्या यह बाइबिल में नहीं लिखा है की हमे दूसरों को जज नहीं करना चाहिए?

२- उदहारण नंबर २ सांसारिक पीड़ा के बारे मैं है । सांसारिक पीड़ा के पीछे ईश्वर का क्या उद्देशय हो सकता है?

३- याकूब १-४ में ख़ुशी का क्या मतलब है? *हे मेरे भैया जब कभी भी तुम तरह तरह की मुश्किलों मैं पड़ो, तो इसे बड़े आनंद की बात समझो क्योंकि तुम यह जानते हो की तुम्हारा ईश्वर मैं विश्वास जब परीक्ष्या मैं सफल हो तो उससे सहनशक्ति उत्त्पन होती है और वह धर्यपूर्ण शक्ति एक ऐसी पूरण्ता को जनम देती है जिससे तुम ऐसे सिद्ध बन सकते हो, जिसमे कोई कमी नहीं रह जाती।"*

४- इस संसार में जहाँ हम रहते हैं , आद्यात्मिक पृष्टभूमि की बहुत काम समझ है, वहीँ अमानुषी शक्तियों जैसे सुपर हीरोज, पिशाच, लाशों आदि की अति परवाह भी है। ऐसा क्यों है?

५- एफिसिओं ६: १२ कहता है- " हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। पॉल का तर्क वास्तविकता के होने की परछाई है । " पॉल का तर्क सच्चाई के अस्तित्व का प्रतिबिम्ब है । यह हमारे संघर्षों की ओर प्रतिक्रिया के बारे में क्या कहता है?

@ प्रोफेसर जेम्स पौंडर

डी लिटिल चर्च वर्ल्ड

३१ अक्टूबर २०१३।